

वाक् व्यवहार पुं. (तत्.) शब्दों का व्यवहार।

वाक् संयम पुं. (तत्.) वाणी का नियंत्रण।

वाक् स्खलन पुं. (तत्.) कथन या वाणी का स्खलन (फिसलन) हो जाना।

वाक् स्तंभ पुं. (तत्.) वाणी का रुक जाना या कंठ से न निकल पाना **चिकि.** हिस्टीरिया, मूर्छा, बेचैनी आदि की स्थिति में गला अवरुद्ध होना या कंठ से आवाज न निकलना।

वाक्सिद्धि स्त्री. (तत्.) मुख से कही बात की सिद्धि या सत्य घटित होना।

वागतीत वि. (तत्.) अवर्णनीय, अनिर्वचनीय।

वागर्थ पुं. (तत्.) वाणी और उसका अर्थ, शब्द और अर्थ।

वागवयव पुं. (तत्.) वक्तृता में उपयोगी शारीरिक अवयव जैसे- कंठ, ओठ, दाँत आदि।

वागा पुं. (तद्.) शरीर में धारण किया जाने वाला एक प्रकार का लंबा वस्त्र, या अंगरखा **स्त्री.** रास, लगाम।

वागाकर्ष पुं. (तत्.) वचन का रुक जाना, वाणी का ह्रास, शक्ति का क्षय।

वागाडंबर पुं. (तत्.) बोलने का आडंबर, विद्वत्ता बघारने के लिए गंभीर शब्दों का प्रयोग।

वागिंद्रिय स्त्री. (तत्.) 'वाक्' (वाणी) की इंद्रिय या ज्ञानेंद्रिय जिससे व्यक्ति बोलता है, वाक् उच्चारण की इंद्रिय।

वागीश वि. (तत्.) 1. वाणी का स्वामी, बोलने में चतुर 2. अच्छा बोलने वाला पुं. देवगुरु बृहस्पति, कवि।

वागीश्वर वि. (तत्.) उपयुक्त वक्ता, वाक्चतुर पुं. देवगुरु बृहस्पति, कवि।

वागीश्वरी स्त्री. (तत्.) 1. विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती 2. छंदशास्त्र में एक समवर्णिक छंद।

वागुरा स्त्री. (तत्.) जाल या पाश, वह जाल जिसमें हिरण आदि फँसाए जाते हैं।

वागुरि स्त्री. (तद्.) जाल, पाश।

वागुरिक पुं. (तत्.) शिकारी, बहेलिया, मृगया करने वाला, मृग आदि जानवरों को फँसाने वाला।

वागेश्वरी स्त्री. (तद्.) वागीश्वरी, विद्या की देवी सरस्वती।

वागकष्ट पुं. (तत्.) चिकि. वचन बोलने में कठिनाई।

वागजाल पुं. (तत्.) वचन का जाल या आडंबर जिससे धोखा-फरेब की बातें की जाए।

वागदंड पुं. (तत्.) 1. वचनों द्वारा दिया गया दंड 2. डाँट-फटकार।

वागदत्ता स्त्री. (तत्.) 1. व्यक्ति विशेष से विवाह करने का वचन पाई महिला 2. सगाई की हुई कन्या।

वागदंश पुं. (तत्.) वचन या वाणी का दंश (छेदन)।

वागदशा स्त्री. (तत्.) वाणी की स्थिति।

वागदान पुं. (तत्.) 1. किसी बात का वचन देना, वादा करना 2. कन्या को विवाह करने हेतु वचन देना, सगाई करना या होना।

वागदुष्करता स्त्री. (तत्.) बोलने में कठिनाता, तुतलाहट या हकलाहट।

वागदेवी स्त्री. (तत्.) वाणी की देवी, सरस्वती।

वागदोष पुं. (तत्.) उच्चारण का दोष, बोलने में त्रुटि।

वागबंध पुं. (तत्.) वचन का बंधन, बोलने में प्रतिरोध या रोक, चुप, मौन रहने की क्रिया।

वागबद्ध वि. (तत्.) 1. किसी के वचन में बद्ध या बँधा हुआ हो, वचनबद्ध 2. संतुलित बोलने वाला, मौन या शांत।

वागबाण पुं. (तत्.) बाण की तरह नोकीला और चुभने वाला वचन, (किसी-किसी व्यक्ति के वचन कठोर और चुभने वाले होते हैं उसके लिए 'वागबाण' शब्द का प्रयोग होता है।)

वाग्भट्ट पुं. (तत्.) ओषधिशाला के प्रसिद्ध लेखक का नाम।

वाग्मिता स्त्री. (तत्.) अच्छा वक्ता होने का गुण या भाव, वक्तृता।

वाग्मिन्त्व पुं. (तत्.) वक्तृत्व।